'हिन्दी रेखाक्षर की कुंजी'

यह पुस्तक छप रही है—इसमें हिन्दी अभ्यासों को रेखाक्षर और रेखाक्षर वालों को हिन्दी में लिखा गया है। इसके लेलेने से गुरु की बिल्कुल आवश्यकता नहीं रहती और शार्टहैंड पढ़ने में बहुत सुगमता हो जाती है।

कागज़, बहुत अच्छा जिल्द सुन्दर मूल्य १)

गति बढ़ाने की पुस्तक।

इस पुस्तक में उपयोगी वाक्य चिन्ह तथा संक्षिप्त शब्दों पर अभ्यास दिये गये हैं। सब अभ्यासों में वाक्य बनाने के लिये संकेत हैं और प्रति २० शब्द के बाद एक निशान है जिसमें बोलने और गति जानने तथा बढ़ाने में सुविधा है। पुस्तक छप रही है। पृष्ठ ६४ मूल्य ।=)

नोट—जिन महाशयों को ऊपर लिखी पुस्तकें मंगाना हो कृपया अपना नाम लिखादें। पुस्तकें छपते ही उनकी सेवा भेज दी जायेंगी।

समर्पण

हिन्दी के प्रेमी
नागरीप्रचारिणी सभा काशी
के
अन्नदाता
भारत के सपूत
श्रीमान पं. रामनारायण मिश्र
बी० ए०

पूज्यवर,

तुम गुरुवर हो, रक्षकवर भी तुम मेरे।
है प्रथम पुष्प तव भेंट सहर्ष घनेरे॥

विनीत,
निष्कामेश्वर।

भूमिका

सन् १९०५ में मैंने स्वर्गीय श्रीमान् श्रीशचन्द्र वसु सबजज के सहयोग तथा सहायता से रेखाक्षर की एक प्रथम पुस्तक, नागरीप्रचारिणी सभा के कहने पर लिख कर उसको समर्पित की थी। पुस्तक लिखते समय यह आशा थी कि इस प्रणाली पर एक बड़ी पुस्तक जो सब प्रकार से पूर्ण हो, शीघ्र लिखनी होगी। परन्तु हिन्दी रेखाक्षर के पढ़ने वालों को किसी आर्थिक लाभ का निश्चित और तात्कालिक लक्ष न होने तथा किसी हिन्दी की बड़ी संस्था के इस ओर उत्तेजना देने का विचार न करने, और न काशी नागरी प्रचारिणी-सभा ही को, कदाचित दूसरे बड़े कामों में फँसे रहने के कारण, पुस्तक के छपवा देने के अतिरिक्त इस शुष्क विद्या के पढ़ाने के लिये और कुछ कर सकने के कारण, यह कार्य जहां का तहां पड़ा रहा। परन्तु अब १९०५ का समय नहीं; यदि उस समय हिन्दी-प्रेम के अंकुर जम चले थे तो आज वे हरे भरे वृक्ष बन कर लहलहा रहे हैं। उस समय पेड़ की भी पूरी आशा न थी आज फल की आशा करने वाले सैकड़ों मौजूद हैं। हिन्दी के व्याख्यान दाताओं की अब कमी नहीं है—कभी कांग्रेस में एक दो हिन्दी की वक्तृतायें सुननी मुहाल थीं आज, अधिकांश व्याख्यान हिन्दी में ही होते हैं। समय के अनुसार हिन्दी-रेखाक्षर के माँग की भिनक भी कानों तक पहुँचने लगी है।

आशा है कि अब यह छोटी पुस्तक जो आप सज्जनों की सेवा में उपस्थित की गई है अपनाई जायगी। मुझे इस प्रणाली की सफलता-पर बहुत कुछ विश्वास है-केवल प्रार्थना

इस बात की है कि हिन्दी के प्रेमी इसको एक बार उस परिश्रम और दृढ़ता से सीखने के लिये कटिबद्ध हों जितनी दृढ़ता तथा संतोष की इस विद्या को आवश्यकता है।

प्रणाली।

के विषय में मुझको केवल इतना ही कहना है कि यह पिटमैन शार्टहैंड के तरह की है। इसको हिन्दी भाषा की आवश्यकता के अनुसार बनाया गया है। परन्तु इसमें बहुत से ऐसे महत्व के नियम हैं जो पिटमैन या और दूसरे शार्टहैंड में नहीं मिल सकते और जिनके कारण यह लिखने तथा पढ़ने में बहुत सुगम हो गई है। इसके सुगम होने का परिचय इस बात से मिल जायगा कि जहाँ अंग्रेज़ी शार्टहैंड को निकले हुए सौ वर्ष से अधिक हो जाने पर भी अभी ६ महीने में १०० प्रति मिनट की गती नहीं होती, उर्दू शार्टहैंड के आविष्कर्ता अपने पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं कि "इस मौके पर इसका इज़हार नामुनासिब न होगा कि दौरान तसनीफ़ किताब हाज़ा में गवर्नमेंट ने १६ सब इन्सपेक्टरान पुलीस वगैरह तालीम फ़न मज़कूर रवाना किये, जिनको तालीम दी गई और तजरबे से यह तरीक़ अज़ बस कामयाब साबित हुआ। चुनांचे १५ माह के क़लील ज़माने में यह तुल्बा १०० लफ़्ज़ फ़ी मिनट के अन्दाज़ से बे तकल्लुफ़ लिख सकते थे" वहां इस हिन्दी शार्टहैंड को चार ही महीने में सीखकर और पर—बनने के साथ ही साथ, जब कि इसमें नित्य नये परिवर्तन होते थे—महाशय अलगूराय ने इतना कर लिया कि सुगमता से व्याख्यान लिख सके। अतः निश्चित है कि अब पुस्तक के नियम स्थिर हो जाने पर कोई भी पुरुषार्थी ४ महीने में १०० या इससे अधिक की गति कर सकता है।

धन्यवाद ।

सबसे अधिक धन्यवाद मुझको अपने मित्र तथा शिष्य महाशय अलगूराय को देना है जिनसे इस पुस्तक के लिखने में मुझको सब से अधिक सहायता मिली। आप इस पुस्तक के लिखे जाने के साथ साथ अभ्यास करते जाते थे जिस कारण से प्रणाली में बहुत से उत्तम २ परिवर्त्तन होते थे। इससे इनको असुविधा अवश्य होता था परन्तु प्रणाली को बहुत लाभ पहुँचा। इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी आपने चार महीने में पूर्ण सफलता प्राप्त करली। चार महीने के अन्दर सैकड़ों परिवर्त्तन होते हुए इस लायक हो जाना कि हिन्दी के प्रसिद्ध वक्ताओं के व्याख्यान लिख लिये और हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान लाला भगवानदीनजी अपने नागरी प्रचारिणी सभा में हरिश्चन्द्र जयन्ति पर दिये हुए व्याख्यान के रिपोर्ट के सम्बन्ध में लिखते हैं "मेरी सम्मति में यह रिपोर्ट ठीक लिखी गई है।") कम महत्व की बात नहीं है और इस प्रणाली के लिये यह कैसी आशा सूचक है सो वे लोग भली भाँति समझ सकते हैं जो ऐसा कार्य से परिचित हैं। तत्पश्चात् मुझको अपने मित्र पं० गोपालप्रसाद शास्त्री साहित्याचार्य और अपने मित्र तथा शिष्य बाबू लालबहादुर वर्मा तथा बाबू त्रिभुवन नारायणसिंह को हार्दिक धन्यवाद देना है जिन्होंने समय २ पर पुस्तक लिखने तथा प्रूफ देखने में बहुत सहायता की। अन्त में मैं हार्दिक धन्यवाद उन सब महाशयों को देता हूँ जिनकी पुस्तकों तथा लेखों से मुझको शब्द तथा वाक्य इत्यादि छाँटने में सहायता मिली है।

निष्कामेश्वर मिश्र।

इस बात की है कि हिन्दी के प्रेमी इसको एक बार उस परिश्रम और दृढ़ता से सीखने के लिये कटिबद्ध हों जितनी दृढ़ता तथा संतोष की इस विद्या को आवश्यकता है।

प्रणाली।

के विषय में मुझको केवल इतना ही कहना है कि यह पिटमैन शार्टहैंड के तरह की है। इसको हिन्दी भाषा की आवश्यकता के अनुसार बनाया गया है। परन्तु इसमें बहुत से ऐसे महत्व के नियम हैं जो पिटमैन या और दूसरे शार्टहैंड में नहीं मिल सकते और जिनके कारण यह लिखने तथा पढ़ने में बहुत सुगम हो गई है। इसके सुगम होने का परिचय इस बात से मिल जायगा कि जहाँ अंग्रेज़ी शार्टहैंड को निकले हुए सौ वर्ष से अधिक हो जाने पर भी अभी ६ महीने में १०० प्रति मिनट की गती नहीं होती, उर्दू शार्टहैंड के आविष्कर्त्ता अपने पुस्तक की भूमिका में लिखते हैं कि "इस मौके पर इसका इज़हार नामुनासिब न होगा कि दौरान तसनीफ़ किताब हाज़ा में गवर्नमेंट ने १६ सब इन्सपेक्टरान पुलीस वग़ैरह तालीम फ़न मज़कूर रवाना किये, जिनको तालीम दी गई और तजरबे से यह तरीक़ उर्दू नवीसी कामयाब साबित हुआ। चुनान्चे १५ माह के क़लील ज़माने में यह तुल्बा १०० लफ़्ज़ फ़ी मिनट के अन्दाज़ से बे तकल्लुफ़ लिख सकते थे" यहां इस हिन्दी शार्टहैंड को चार ही महीने में शौकिया तौर पर—बनने के साथ ही साथ, जब कि इसमें नित्य नये परिवर्त्तन होते थे—महाशय अलगूराय ने इतना कर लिया कि सुगमता से व्याख्यान लिख सके। अतः निश्चित है कि अब पुस्तक के नियम स्थिर हो जाने पर कोई भी पुरुषार्थी ४ महीने में १०० या इससे अधिक की गति कर सकता है।

धन्यवाद ।

सबसे अधिक धन्यवाद मुझको अपने मित्र तथा शिष्य महाशय अलगूराय को देना है जिनसे इस पुस्तक के लिखने में मुझको सब से अधिक सहायता मिली। आप इस पुस्तक के लिखे जाने के साथ साथ अभ्यास करते जाते थे जिस कारण से प्रणाली में बहुत से उत्तम २ परिवर्तन होते थे। इससे इनको असुविधा अवश्य होता था परन्तु प्रणाली को बहुत लाभ पहुँचा। इन सब कठिनाइयों के होते हुए भी आपने चार महीने में पूर्ण सफलता प्राप्त करली। चार महीने के अन्दर सैकड़ों परिवर्तन होते हुए इस लायक हो जाना कि हिन्दी के प्रसिद्ध वक्ताओं के व्याख्यान लिख लिये जाँय (हिन्दी के प्रसिद्ध विद्वान लाला भगवानदीनजी अपने नागरी प्रचारिणी सभा में हरिश्चन्द्र जयन्ति पर दिये हुए व्याख्यान के रिपोर्ट के सम्बन्ध में लिखते हैं "मेरी सम्मति में यह रिपोर्ट ठीक लिखी गई है।") कम महत्व की बात नहीं है और इस प्रणाली के लिये यह कैसी आशा सूचक है सो वे लोग भली भाँति समझ सकते हैं जो रेखाक्षर से परिचित हैं। तत्पश्चात् मुझको अपने मित्र पं० मोहनप्रसाद शास्त्री साहित्याचार्य और अपने मित्र तथा शिष्य बाबू लालबहादुर वर्मा तथा बाबू त्रिभुवन नारायणसिंह को हार्दिक धन्यवाद देना है जिन्होंने समय २ पर पुस्तक लिखने तथा प्रूफ देखने में बहुत सहायता की। अन्त में मैं हार्दिक धन्यवाद उन सब महाशयों को देता हूँ जिनकी पुस्तकों तथा लेखों से मुझको शब्द तथा वाक्य इत्यादि ढूँढ़ने में सहायता मिली है।

परामर्श

इस किताब में संक्षिप्त प्रणाली के कुल नियम और अभ्यास के ढंग बतला दिये गये हैं। इस किताब को पढ़कर कोई हिन्दी का जानने वाला, बिना किसी अध्यापक की सहायता के भी, रेखाक्षर का पूरा ज्ञान और १०० शब्द प्रति मिनट की गति प्राप्त कर सकता है। अधिक सुविधे के लिये इस पुस्तक की 'कुञ्जी' भी बन रही है जिसमें रेखाक्षर में दिए हुए अभ्यासों को हिन्दी और हिन्दी के अभ्यासों को रेखाक्षर में लिखा गया है। इसको लेलेने से और नीचे लिखे परामर्श को याद रखने से अध्यापक की बहुत कम ज़रूरत रह जायगी।

यह सभी मानते हैं कि हमारी हिन्दी लिपि संसार में सब से सुगम और सब तरह से दोष रहित है। इसका कारण यही है कि इसके अक्षर ध्वनि (आवाज़) पर बने हैं और एक अक्षर सदा एकही आवाज़ का बोधक होता है। इसी तरह रेखाक्षर की प्रणाली, चाहे अंग्रेजी की हो चाहे हिन्दी की, आवाज़ पर बनी है। हिन्दी जानने वालों से इस सम्बन्ध में कुछ और कहने की आवश्यकता नहीं है।

बहुत से लोग जो रेखाक्षर से अनभिज्ञ हैं शीघ्र लिपि प्रणाली का नाम सुनकर समझ लेते हैं कि यह एक ऐसी विद्या है कि जिसमें लिखते समय हाथ की चाल बहुत जल्दी होनी चाहिये और जब वे किसी रेखाक्षर सीखने वाले को धीरे २ लिखते देखते हैं तो हँसते और ताज्जुब करते और कहते हैं कि यह कैसी शीघ्र लिपि प्रणाली है जिसमें ऐसे धीरे धीरे लिखा जाता है, इससे तो हम हिन्दी में जल्दी लिख सकते हैं। यह ध्यान उनके शीघ्र लिपि प्रणाली और उसके

है और गति भी देर में बढ़ती है, इस कारण अधिक कागज़ खर्चने से व्यय भी अधिक होता है। इस लिये कागज़ कलम दावात पेंसिल इत्यादि बहुत अच्छे होने चाहिये। कलम को पोले से पकड़ना चाहिये और हाथ को कोहनी पर टेक कर (हथेली पर नहीं) बिचली उंगली के सहारे लिखना चाहिये। लिखते समय बायां हाथ ज़मीन या टेबुल पर टेकने से कुल ज़ोर उस हाथ पर रहता है और दाहिना हाथ पोले से जल्दी चलता है। विद्यार्थियों को नियमों को अच्छी तरह सीख कर उनके साथ के दिए हुए अभ्यासों को पूरी तौर पर मश्क करना चाहिये। जब तक अभ्यासों को बिना किसी कठिनाई के लिखने की आदत न हो जाय दूसरे अभ्यास सीखने उचित नहीं। जब विद्यार्थी वाक्य इत्यादि लिखने के योग्य हो जाय तो उसे चाहिये कि किसी से बुलवा कर लिखने का अभ्यास करे, यह अभ्यास नित्य करना उचित है।

यह खूब समझ लेने की बात है कि शीघ्र-लिपि, प्रणाली नित्य नियमानुसार अभ्यास करने वाले को आ सकती है। एक दिन अभ्यास करके दो दिन की छुट्टी मनाने वाले के लिये इस विद्या का सीखना असाध्य सा है। नित्य एक घन्टे रोज़ कार्य करने वाला दूसरे दिन तीन घन्टे काम करने वाले से बहुत अच्छा है। १०० शब्द की गति होने पर भी लिखते रहना आवश्यक है। जितना विद्यार्थी के लिये रेखाक्षरों का बुलवा कर लिखना ज़रूरी है उतनाही लिखे हुए रेखाक्षरों का पढ़ना भी ज़रूरी है। सच पूछिये तो रेखाक्षर सीखने वाले विद्यार्थी को सब से अधिक परिश्रम अपने लिखे हुए मज़मून को पढ़ने में होता है। लिखित रेखाक्षरों को जल्दी और शुद्ध पढ़ने के लिये दो बातों की आवश्यकता है—(१) सुन्दर अक्षर-

जितना साफ़ लिखा होगा और जितने सुन्दर अक्षर होंगे उतः नाही अच्छी तरह और साफ़ पढ़ा जायगा—(२) अभ्यास जितनी शब्दों से और आँख से पहचान होगी, जितनी ज़्यादा बार शब्द पढ़ा गया होगा या जितना ज़्यादा लिखा गया होगा उतने ही सहूलियत और शुद्धता के साथ वह लिखा और पढ़ा जा सकेगा। यह कोई नया नियम नहीं है, पर रेखाक्षर के विषय में जितना यह घटता है उतना कदाचित दूसरे में नहीं।

रेखाक्षरों को जल्दी पढ़ने के लिये लिखित रेखाक्षर की पाठ्य-पुस्तक बड़ी उपयोगी होती है। पर अभी यह प्रणाली नयी है। जब इसमें लोगों को अधिक रुचि हो जायगी और ऐसी पुस्तकों की मांग अधिक आने लगेगी तब यह पुस्तकें बन जायेंगी। जब तक ऐसी पुस्तकें नहीं बनती तब तक अपने ही लिखे को अधिक पढ़ना चाहिये। अपने लिखे को एक या दो दिन के बाद भी पढ़ना अच्छा है। पढ़ते समय भूलों को देखते जाना, निशान करके उनके शुद्ध रुप का अभ्यास करना बहुत आवश्यक है। केवल यह ही नहीं परन्तु यह भी देखना चाहिये कि अमुक भूल किस कारण हुई और यथा साध्य उस कारण को हटाने का प्रयत्न करना चाहिये। जिसमें फिर उसी कारण से भूल न हो।

ह्रिस्वर और क्रिया-विभक्तियाले अभ्यासों को बड़ी सावधानी से पढ़ना चाहिये। ये बड़े महत्त्व के हैं। शब्दाक्षर वाला अभ्यास भी भली प्रकार अभ्यस्त कर लेना चाहिये। बड़े शब्दों को संक्षिप्त बनाने का अधिकांशतः विद्यार्थियों पर छोड़ दिया गया है। आशा है कि वे उस पर ध्यान देंगे। पहले तो हिन्दी में बड़े शब्द हैं ही कम, दूसरे जो हैं भी वे बहुत बार प्रयोग नहीं किये जाते, तीसरे इस प्रणाली में बहुत

कम ऐसे रेखाक्षर चिन्ह बड़े से बड़े शब्दों के लिये होंगे जो लिखने में भद्दे या कठिन हों, तिसपर से भी अधिक बार आने वाले बड़े शब्दों के रूप याद कर लेने और कम आने वाले बड़े शब्दों के लिखने में पुस्तक में दिए हुए नियम को काम में लाने से लिखने की गति बहुत बढ़ आती है। इसी तरह वाक्य चिन्हों को लिखने और स्वयं बनाने का अभ्यास करना चाहिए। यह पुनः कह देना अच्छा होगा कि जितना वाक्य-चिन्हों, संक्षिप्त शब्दों तथा शब्दाक्षरों का अभ्यास विद्यार्थियों को होता जायगा उनकी लिखने की गति अपने आप अधिकाधिक बढ़ती जायगी।

इस पुस्तक के जो दो भाग कर दिये गये हैं उसका कारण यह है कि हिन्दी के अक्षर 'लीथो' में उतने सुन्दर और साफ़ नहीं उतरते जितने कि छापे में। यदि पहिले लीथो में छपवा कर पुनः हिन्दी में छपवाया जाता तो किताब के छपवाने की कठिनाई के साथ साथ उसका मूल्य भी अधिक हो जाता। जैसे १२० पृष्ठ वाली उर्दू शार्टहैण्ड की पुस्तक का मूल्य ५) है। इस पुस्तक में कुल नियम तथा हिन्दी के अभ्यास दिये गये हैं। दूसरी पुस्तक में उदाहरणों के रूप रेखाक्षर में और रेखाक्षरों के अभ्यास हैं। विद्यार्थी समझ ही जायेंगे कि हिन्दी में जो अभ्यास दिये गये हैं वे रेखाक्षर में लिखने के लिये हैं और इसी प्रकार रेखाक्षर के अभ्यासों को हिन्दी में लिखना चाहिये। अभ्यासों का नम्बर उसी क्रम में दिया गया है जिस क्रम से उनका अभ्यास किया जाना चाहिये। दोनों पुस्तकें साथ ही पढ़ी जानी चाहिये। आशा है कि पाठक इस त्रुटि के लिये क्षमा करेंगे। इससे उनको कष्ट अवश्य है और विषय के सीखने में कुछ भी वास्तविक हानि नहीं है।

हिन्दी-शार्टहैण्ड

अर्थात्

हिन्दी की संक्षेप लेख-प्रणाली।

रेखाक्षर के नियम तथा हिन्दी-अभ्यास।

---

१. रेखाक्षर के व्यञ्जनों के बनाने में सहज रेखाओं का आश्रय लिया गया है जैसा कि रेखाक्षर संस्करण के पहले अभ्यास को देखने से मालूम होगा।

२. इन व्यञ्जनों को संस्कृत के पाँच वर्गों के अनुसार चुना गया है।

३. ये रेखायें दो प्रकार की होती हैं—एक पतली, दूसरी मोटी। वर्ग के प्रथम और द्वितीय अक्षर सब पतली रेखाओं से बनते हैं और उन्हीं रेखाओं को जब मोटा कर दिया जाता है तो क्रमसे उसी वर्गके तृतीय और चतुर्थ अक्षर बन जाते हैं।

४. 'ट' वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ अक्षर, य, र, और ल को छोड़ सब अक्षर ऊपर से नीचे को लिखे जाते हैं। 'क' वर्ग तथा सानुनासिक वर्ण रेखा पर ही लिखे जाते हैं। 'ट' वर्ग के द्वितीय, औरचतुर्थ अक्षर तथा य, र और ल नीचे से ऊपर को चढ़ते हुए लिखे जाते हैं। (देखिये रेखाक्षर संस्करण का पहला अभ्यास)

लिखकर याद कर लेना चाहिये बिना इनके याद किये आगे का अभ्यास करना बिल्कुल ठीक नहीं ॥

११. 'शब्द चिन्हों' के लिखने में स्थान का विशेष ध्यान रखना चाहिये अर्थात् जो चिन्ह लकीर पर हों वे लकीर पर रहें, जो लकीर के ऊपर हों वे ऊपर और जो उसके नीचे हों नीचे ही लिखे जाने चाहियें। लकीर के ऊपर और नीचे इत्यादि लिखने में जहां तक हो सका है नियम का पालन किया गया है ? यानी प्रायः आवाज़ में मिलते हुए शब्दों को एक ही स्थान दिया गया है। शब्दान्तर में-जैसा आगे कहा जायगा-तीन स्थान होते हैं (१) लकीर के ऊपर इसमें अधिक-तर उन शब्दों को रखने का प्रयत्न किया गया है जिनके बीच में 'आ' खास स्वर है जैसे पाया, याद। दूसरे स्थान के शब्द लकीर पर लिखे जाते हैं इनमें इ ई, ऐ वाले शब्द अधिक होते हैं। तीसरा स्थान लकीर के नीचे का है इनमें उ, ऊ, ओ औ वाले शब्दों का अधिक प्रयोग होता है ॥

तेरहवां अभ्यास।

(१) मैंने वह देखा है।

(२) राम और वह वहां उस मन्दिर में हैं।

(३) राम और गोपाल जो कि यहां थे देखो किस ओर गये हैं।

(४) अभी वह उस घर में गया है।

(५) तुम और वह मेरे साथ खेलते थे।

वाक्य चिन्ह।

१२. साधारण अक्षरों में भी जल्दी लिखते समय अकसर दो या तीन शब्दों को एक साथ बिना कलम उठाये लिखा

जाता है। वैसे ही रेखाक्षरों में भी होता है। ऐसे चिन्हों को 'वाक्य चिन्ह' कहते हैं। जैसे, 'उस' और 'से' मिलकर 'उससे' वाक्य चिन्ह है॥

ऐसे चिन्ह विद्यार्थी भी कुछ अधिक सीख जाने पर स्वयम् बना सकते हैं। ऐसे चिन्हों के बनाने में निम्नलिखित नियम ध्यान रखने चाहियें।

(१) पहला 'शब्द चिन्ह', जिसमें अन्य चिन्ह जोड़े जाते हैं, अपने स्थान पर ही लिखा जाता है और दूसरे उसके साथ जोड़ दिये जाते हैं। उनके अपने स्थानों का ध्यान नहीं किया जाता। जैसे, 'मैं भी कहता हूं' इस 'वाक्य चिन्ह' में 'मैं' का पहला स्थान रहेगा और 'भी, कहता और हूं, क्रम से उसमें जोड़ दिये जायेंगे उनके स्थान का कुछ ध्यान नहीं किया जायगा, कहीं पड़ जायें॥

(२) 'वाक्य चिन्ह' भद्दे न बनने चाहियें वे ऐसे हों जिससे उनके लिखने और पढ़ने में कठिनाई न पड़े।

(३) 'वाक्य चिन्ह' ऐसे न बन जाँय जो किसी प्रसिद्ध शब्द के "शब्द चिन्ह" से बिल्कुल मिलते हों और उनके पढ़ने में भ्रम पड़े।

पन्द्रहवां अभ्यास।

(१) आज से चार दिन पहले मैंने उसको तीन सेव दिये थे।

(२) वह यहाँ से उस-ओर आरहा था।

(३) सब इस-में-से पानी लेकर उसको देते हैं।

(४) उसका-मैंने बार २ मना किया, वह कुछ सुनता भी है!

(५) वह, जो उसके घर में-है पूछने पर 'मैं-हूं' कहता है।

सतरहवां अभ्यास।

(१) पाई, भाई, लाऊं, आओ, चलिये आइये, खाओ लाई, पाप चलवैया, बोआ, नचवैया।

(२) लदिए, भइए, देखिए, लोई, खोई, धोआ, बोआ, दिया, सोए, टोए।

(३) कमाइये, खोइयो, धोइयो, नहाइयो, पाया, गया, खाया।

(४) मैंने कैबार तुमको उसका नाम बताया।

(५) वह यहां क्यों आया है सो मैं ही जानता हूं।

(६) यहाँ एक आदमी कई महल में आयगा।

(७) वह हो या तुम कोई तो यहाँ आओ।

(८) एका होना अच्छी बात है किन्तु फूट करना अच्छा नहीं।

(९) ज्योंही वह आया मैं बोल उठा, "आओ, यहाँ आओ" क्योंकि मैं बड़ी देर से उसकी राह देख रहा था।

'स' या 'श' वृत्त।

(१२) 'स' या 'श' जब अकेला आता है या उसके पहले कोई स्वर होता है तो वह पूरा लिखा जाता है, पर जब वह किसी दूसरे व्यञ्जनों के साथ शब्द के पहले, बीच में या अन्त में आता है तो आगे एक छोटा सा वृत्त उसके लिये लिखा जाता है। जैसे कास, पास, स्प, स्पष्ट।

१५. 'स' वृत्त जब किसी ऐसे दो व्यंजनों के बीच में आता है जो आपस में मिलकर कोण बनाते हों तो यह कोण के बाहर की ओर निकलता हुआ लिखा जाता है। जैसे, खिसकी, पिशाच।

१६. 'स' वृत्त जब दो वक्र रेखाओं के बीच में आता है तो प्रायः पहली वक्र रेखा के अन्दर की ओर लिखा जाता है। जैसे, मौसिम, नसीम, खसखस।

१७. 'स' वृत्त जब किसी वक्र रेखा में जोड़ा जाता है उसके अन्दर की तरफ लिखा जाता है। जैसे, साथ, सास, नाग

१८. 'स' वृत्त जब शुरू में लगता है तो हमेशा शुरू में (स्वर और व्यंजन दोनों के) बोला जाता है। जैसे, सोच, सबा। यहाँ 'स' पहले बोला गया है और फिर क्रम से स्वर और व्यंजन का उच्चारण हुआ है।

१९. जब 'स' वृत्त वर्ण के अन्त में लगता है तो स्वर और व्यंजन दोनों के पीछे बोला जाता है। जैसे, पचास, मास।

२०. किसी शब्द के अन्त में 'स' के पीछे यदि स्वर हो तो 'स' पूरा लिखा जाता है। जैसे, किस्सो, खासी।

२१. जब 'स' से पहले कोई स्वर हो तो 'स' पूरा लिखा जाता है। जैसे, ओस।

इक्कीसवां अभ्यास।

(१) कौम, बीम, प्रैस, साम, तीम, मूस, कासिद, खास

(२) नाश, सुद, सोफा, साथी, मसल, सबब, सजन मूस।

(३) स्कूल, खिस्सी, गबन, बस्ती, नाज़मा, कस्ली, दस्ता

(४) कसाई, सीमा, मौसा, हौसला, हस्ती, बाउन।

(५) उसमान, आसमानी, बासा, असबाब, हंसी, इसलाम

(६) इसके लिये एक सब से अच्छा बतुला लाइये।

(७) सब लोग सम्मान से सामने के आसन पर बैठाए गये, पर जैसा पहिले समझा था कुछ भाषण न कर सके॥

(८) उस स्थान पर उसके सिवाए ऐसा कोई नहीं है जो मुझे समझाए।

(९) वह सभा में बिनाबुलाए, किसी के कहने से नहीं, सिर्फ अपने सौहृत के फल के अनुसार आया था।

(१०) ऐसा न हो कि तुम सारा सारांश ही उन्हें बतादो।

तेइसवां अभ्यास।

(१) समझ में नहीं आता कि वह क्यों नहीं आया।

(२) मौसिम खराब है, इसके लिये क्यों नहीं छाता खरीद करते। नहीं तो कोई बाहर नहीं आवगा।

(३) जब मैं राम के पास गया सिवा उसके कोई नहीं आया था।

(४) ऐसा कोई नहीं है जो लड़कों को पढ़ाने के लिये उसे नहीं समझाता।

(५) सब से मैं यह कह चुका हूं पर कोई नहीं समझता।

'बड़ा वृत्त'

(२२) व्यंजनों के आदि में एक बड़ा वृत्त लग जाने से ज़, या स्व लग जाता है। बड़े वृत्त के लगाने के वही नियम हैं जो छोटे वृत्त के। जैसे, स्वदेश, ज़नाना॥

(२३) व्यञ्जनों के बीच में बड़ा वृत्त केवल ज़ या ज का चिन्ह होता है। वृत्त के लगने के वही नियम होते हैं जो

(२) आदि में हमारे साथ के लोग उनके आने का समय जानने के लिये जैसे अति आतुर थे वैसे अब क्यों नहीं हैं ॥

(३) जिसे जैसा माल चाहिये या जिस चीज़ की ज़रूरत हो उन्हें पता दो ॥

(४) मेरे समझ में नहीं आया कि ज्योतिषी लोग ज्योतिष का सुधार क्यों नहीं करते ॥

(५) उनको यदि हमारे लोगों से छेड़ छाड़ न करनी होती तो उसके साथ मेल की तजवीज़ क्यों की। अतः उनसे हमलोगों को अब सजग रहना चाहिये ॥

अंडाकार वृत्त ।

(२५) अण्डाकार वृत्त शब्द के आदि के व्यञ्जन में लगाने से उस शब्द में सम या सन लग जाता है। जैसे, समाचार, समत्योहार।

(२६) शब्द के बीच में और अन्त में यह चिन्ह 'स्थ' 'स्त' 'ष्ट' का सूचक होता है। जैसे, समस्त, पिस्तौल निस्तेज, मिस्तरी।

(२७) जब यह वृत्त आधे व्यञ्जन से बड़ा लिखा जाता है तो 'स्तर' या 'स्थर' का बोधक होता है। जैसे, विस्तर, नश्तर, शस्त्र।

अट्ठाइसवां अभ्यास।

(१) श्रेष्ठ, उत्कृष्ट, सन्तुष्ट, धृष्ट, कष्ट, कनस्टर, ईस्टर।

(२) लिस्टर, विस्तार, दस्ताना, दस्तर, दुस्तर, क्रिष्ट।

(३) मिस्टर निवेदिता अपने समय की पुस्तक लेखिकाओं में परम सम्मानिता हुई हैं और समय २ पर प्रशंसा प्राप्त कर सकी हैं।

(४) सम्पादक का सम्पादन कर्म तभी लोगों को सन्तुष्ट कर सकता है जब उसमें निरपक्षपातता स्पष्ट रूप से दृष्टि आता हो।

(५) उस दुष्ट की धूर्तता के कारण इस काठ के छोटे टुकड़े से ही सम्भवतः मेरा बिस्तर नष्ट हुआ।

(६) वृष्टि बाहुल्य से यह सम्भावना है कि गृहस्थों के समस्त कच्चे मकान भग्न हो जायेंगे।

(७) हमें शिष्टाचार की आशा शिष्ट लोगों से ही करनी चाहिये क्योंकि अशिष्ट जनों के लिये शिष्टाचार की समझना दुष्कर है।

(८) साम्य और संयम ये विशिष्ट कर्म हैं जो मनुष्य को ईश्वर सदृश्य बनाने में यथेष्ट कहे जाते हैं।

तीसरा अभ्यास।

(१) क्लास में हर एक विद्यार्थी अपनी समझ में सावधान रहता है।

(२) मास्टर और शिष्य को हमने सिवाय पण्डित जी के और किसी से कहा सा नहीं सुना है।

(३) "हम से गुणवान कौन है" यह मूर्ख लोग ही कहा करते हैं।

(४) इतना जिद करने से मनुष्य को जो हानि हुई सो यह सब जानते हैं।

(५) सत्य परायण निःस्पृह महानुभाव कम हैं। अतः यह दुर्लभ सा नहीं है।

(६) उसका घोड़ा मेरे घोड़े से उमदा नहीं है। यह उस के समान भी नहीं कहा जा सकता।

(२८) य, र, ल, और न को व्यञ्जनों के साथ लिखने के लिये अंकुशों का प्रयोग किया जाता है।

आदि में लगने वाले अंकुश।

(२९) खड़े व्यञ्जनों के बाईं तरफ़, सोये हुए व्यञ्जनों के नीचे और वक्र रेखा वाले व्यञ्जनों के अन्दर की तरफ शुरू में एक अंकुश लगाने से उनके अन्त में 'र' जुड़ जाता है। जैसे प्र, कर, त्र, ध्र, थर, नर।

(३०) खड़े व्यञ्जनों के दाहिनी तरफ़ और सोये हुए व्यञ्जनों के ऊपर एक अंकुश लगाने से उनके अन्त में "व" जुड़ जाता है। जैसे, कव, दव, दवा।

बत्तीसवां अभ्यास।

(१) कर, घर, मर, हर, धरा, चाकर, काव्य, पात्र, तत्व, महोदय, त्याज्य, पूज्य, पत्र।

(२) चक्र, नश्तर, कसर, धर्म, धर्मी, फ़र्ज़।

(३) मिस्टर, दफ़्तर, पत्थर, ख़रीदा, जुर्माना।

(४) मास्टर ने कई बार उसको ताकीद की थी मगर उसकी तो इस तरफ़ प्रवृत्ति ही न थी।

(५) धर्म और धैर्य को छोड़कर आदमी को इधर उधर मारे मारे फिरना पड़ता है।

(६) शायद पार्लियामेण्ट का ध्यान अब पञ्जाब इन्त-ज़ाम की तरफ़ जा जाय तो ताज्जुब नहीं, क्योंकि यह आन्दोलन असाधारण है।

(७) मेरे प्रेम का उद्देश्य जानना हो तो उससे पूछ लो।

लगा हुआ अंकुरा उनके अन्त में " न " का सूचक होता है। यथा, बन, तन, पान, कान, फन, दान, धन, नैन।

(३२) खड़े व्यञ्जनों की दाईं ओर और सोये हुए व्यञ्जनों के ऊपर की तरफ अन्त में लगा हुआ अंकुरा उनके अन्त में "ल" का सूचक होता है। यथा, पल, ताल, कल, चल, चला।

(३३) वक रेखाओं के आदि में एक बड़ा अंकुरा लगाने से उनमें 'ल' जुड़ जाता है। जैसे, मल, खल, सलानत।

छत्तीसवां अभ्यास।

(१) भजन, लगन, मगन, चीन, जापान, ध्यान, बयान, जियान, बिहान, किसान, पिसान,।

(२) मनन, चलन, धनन, ठनन, झनन, पतन, सज्जन गान, जीवन, यान, जान, ज्ञान।

(३) भारत भारती के रचयिता ने बड़ा सम्मान पाया है।

(४) छान बीन करके एक बात को भली प्रकार जान लो तब कुछ कहने का साहस करो।

(५) जनाब मिरज़ा साहब बिनबल जलालपुर के बाशिन्दा हैं और फ़ारसी खूब पढ़े हैं।

(६) भजन गा गा कर आर्य समाज ने बड़ा प्रचार किया।

(७) सन्तलोग ईश्वर के ध्यान में मग्न रहते हैं उनको और का चिन्तन नहीं होता।

(८) मनन किये बिना अध्यात्म शास्त्र सिद्ध नहीं हो पाता, क्योंकि क्लिष्ट विषय है।

(९) छल, दल, मल, सल, हल, खल, फल, टल।

(१०) मसलनलो, फजैल्ला, बादल, बिल्ला, गुंचला, फोकला, मक्ला।

(११) दलदल, मलमल, दिक्कत, डुलिया, दर्शन, पैदल।

हुक वाले व्यञ्जनों में 'स' का लगना।

(३४) जिन व्यञ्जनों में "र" या "ल" अंकुश लगा है उनमें "स" वृत्त अंकुश के अन्दर लगता है जिससे बिना अंकुश वाले व्यञ्जनों से फ़र्क़ जान पड़े। जैसे, सत्य, सेवर, सबल।

(३५) वक्र व्यञ्जनों में वृत्त अन्दर की ओर लगता है। जैसे सिम्पर, सफर, सुधार, सिसिर।

(३६) "र" या "न" हुक में "स" वृत्त उसी तरफ जोड़ा जाता है जिस तरफ अंकुश होता है, अंकुश का रूप वृत्त में बदल जाता है जैसे, सब, सबर, सज, सजर, कस, कसर, सद, सदर, गस, गसन।

अड़तीसवां अभ्यास।

(१) पहले पहलों तो इस पद की इच्छा करना।

(२) सबर करो, साहब अपील सुनेंगे और अपना सब धन मुक़दमें की पैरवी में लगाओ।

(३) सर्वदा पितरों को लोग जल न देकर क्यों वर्ष खास महीने में ही देते हैं सो समझ में नहीं आता।

(४) अच्छे चाल चलन से आदमी का मान मर्याद रहता है। मान ही मर्याद जीवन है।

(५) सबल और निर्बल सापेक्ष शब्द हैं वास्तव में सभी समान हैं।

(६) केवल धर्म से ही उन्नति हो सकती है।

(७) इधर उधर भटकते वही लोग हैं जो बेकार और आलसी हैं।

(८) कलक्टर साहब ने उस ग़रीब की अपील क्यों नहीं मंज़ूर की।

(९) सुफल, सधन, सदन, स्थल, स्थिर, सञ्चालक।

(१०) सद्धर्म्म, सत्याग्रह, श्रीमान, वंशधर, सपर, सुघर, शिखर, सद्र, सफ़र, सनर।

(११) निष्प्रयोजन, सप्रेम, शक्कर, सक्रोध, शुभ्र, सुघर।

(१२) सब्र, सुकात, पंख, तौल, फंस, हंस, दंश, जिन्स

(१३) लेन्स, सेव्य, विस्तार, स्वीकार।

"ह" का बिन्दु।

(३७)* किसी शब्द में उसके स्वर के पहले एक नुक़्ता देने से उस स्वर के पहले " ह " बोला जाता है जैसे हाफ़ना हानि, बृहद।

चालीसवाँ अभ्यास।

(१) हाथ, ताह, पहाड़, हिम्मत, सहित, हत, हित, हानि।

(२) हसुली, हिमालय, हिरासत, हालत, हौसला, होमरूल, होलिका।

(३) तोहमत, सहमत, राहमत, जहमत, फ़लाहत, हिमायत।

(४) मुझे बड़ा अफ़सोस है कि फ़िज़ूल ही यहां ऐसा फ़िसाद हो गया।

नोट—उर्दू में ऐसे शब्द हैं जिनमें " ह " न लिखने पर भी वे पढ़ लिये जा सकते हैं। [illegible] में जितने शब्द [illegible] ऐसे शब्दों में आता है जैसे [illegible] जहां [illegible] लिखा गया है और [illegible] जा सकता है। (१) में [illegible] के जो "ह" हैं वे छोड़ दिये

(४) मेरे लिये किस से आपने कहाया? यह तो
कि कुछ भी आप ने उन से मेरे विषय में नहीं कहा।

(५) जहां से यह मेघ आया था वहां से फिर उस वक्त
से कुछ नहीं आया जब से यह वहाँ से चला आया है।

व्यञ्जनों के आधा करने के नियम।

(४१) शब्दों में अन्त के व्यञ्जन के साधारण परिमाण
को आधा करके लिखने से उस व्यञ्जन के अन्त में त, ता, ती,
ते अर्थात भूत और वर्तमान कालिक क्रियाओं की
जुड़ जाती हैं। इन कालों के रूप को पूरा करने के लिये केवल
था, है या हैं जोड़ना रह जाता है। जैसे गाता, खाता, सोता,
रोता, खेलता, नाचता,।

(४२) क्रियाओं के अतिरिक्त अन्य शब्दों के अन्त में भी
इसी नियमानुसार त, ता, ती, ते, या द लगता है जैसे बात,
खेत, आदत, मौत, सीत, लात हाथ, साद॥

(४३) शब्दों के बीच में या आदि में किसी व्यञ्जन को
आधा करके लिखने से उसमें त या द जुड़ जाता है। जैसे
पथ, कदम, दस्त, तत्व, प्रतिकार।

छियालीसवां अभ्यास।

(१) सत, पत, दद, खत, मद,मद, पद, कत, छत।

(२) आदत, आफत, उद्दित, औरत, आमद, औसत,
इज्जत, इलत, उचित।

(३) विदित, अब्बादित, कदाचित, पदच्युत, तुरन्त
द्वन्द, अनन्त, अन्तर्गत, अध्यात्मिक।

को दूना नहीं किया जायगा जैसा साधारण नियमानुसार किया जाना चाहिये था, परन्तु 'थ' को साधारण रूप से लिखकर 'ट' को दूना करने से उसमें 'न' 'ना' इत्यादि लगा कर थाटना या थाटने इत्यादि मतलब से पढ़ा जाएगा। जैसे, थांटना, छांटना, मोड़ना ॥

उनचालवां अभ्यास।

(१) एक छोटा लेकिन मोटा घोड़ा गाड़ी को छोड़ सड़क पर सरपट दौड़ रहा था। गाड़ी भी झटके से टूट कर गड्ढे में लुढ़क पड़ी। उसके खटाखटकी आवाज़ से बटोही चटपट दौड़ परे। जब उनसे गाड़ीवान ने गिड़गिड़ा कर गाड़ी उठाने को कहा तो खटपटा कर पीछा छुड़ाने के लिये खटपटाने लगे॥

(२) यह तो सिद्ध हो चुका है कि हिन्दी उर्दू में इतना भी भेद नहीं है जितना हिन्दी बंगला या हिन्दी गुजराती या हिन्दी मराठी में है। क्रिया पद उर्दू में प्रायः सबही हिन्दी के अर्थात् संस्कृत प्राकृत के हैं। खाना जाना, लाना, पीना, देखना, सुनना, सोना, जागना, जानना, बुझाना, समझना, चलना, फिरना इत्यादि धातुओं की बनावट हिन्दी की है। व्यक्तिवाचक शब्द सब हिन्दी के हैं।

(३) बटन अभी पटने में नहीं बनते। ढाका में सस्ता और अच्छा देशी लोप का बटन बनता है। साटन का कपड़ा छालटी से अच्छा होता है या बुरा? दोनों प्रकार के कपड़े मिलों में बनते हैं। बोलना और साथ ही साथ हंसना असभ्यता

सूचक है। शिक्षक को चाहिये कि शिष्य को ऐसा करने पर डांटे। डांटना बुरा नहीं पर कठिन और क्रूर शब्दों में न हो।

स्वरों को आदि और अन्तमें लगाने के नियम।

(४७) व्याख्यानों को जल्दी लिखने में प्रायः शब्दों में स्वर नहीं लगाये जा सकते। परन्तु कुछ शब्द ऐसे हैं जिनके पढ़ने में भ्रम हो सकता है इसलिये नीचे लिखे चिन्ह स्वरों के लिये निर्धारित किये गये हैं जिनका बिना कलम उठाये शब्दों के आदि और अन्तमें लगाने से उनके पढ़ने में बड़ी सुगमता होती है। परन्तु हरएक शब्द में यह चिन्ह लगाने से समय नष्ट होने और लिखने में देर होने की सम्भावना है। इसलिये इन चिन्हों को पहले सब शब्दों में लगाकर अभ्यास कर लेने के पश्चात् उन्हीं शब्दों में लगाना उचित है जो कठिन जान पड़ें, या जिनमें दूसरे शब्दों के भ्रम होने की सम्भावना हो। कहीं २ पुराने स्वर-चिन्ह ही सुगम प्रतीत होंगे, वहां उन्हीं का प्रयोग होना चाहिये। सारांश यह है कि इनके प्रयोग के लिये, कि कहां कियाजाय कहां न कियाजाय, कोई विशेष नियम नहीं बतलाया जा सकता। यह लेखक के अनुभव पर निर्भर है।

(४८) वर्णों के आदि में 'और' चिन्ह 'अ' और 'आ' के सूचक होते हैं। जैसे आम, अनानास, आनन्द, अखबार, आब, अमन्।

(४९) 'अ' या 'आ' के बाद 'स' वृत्त नहीं लगता क्योंकि नियमानुसार 'स' पूरा लिखा जाता है। ऐसे अवसर पर स्वर लिखना अनावश्यक है, क्योंकि 'स' का पूरा लिखा

आनाही सिद्ध करता है कि उससे पूर्व स्वर है। जैसे, आसनान असमय, असमंजस।

(५०) वर्णों के आदि में "और" चिन्ह 'उ' 'ऊ' 'ओ' 'औ' के सूचक होते हैं। नीचे मुख वाला चिन्ह प्रायः र, ल, ठ, ढ में ही लगता है। जैसे ऊब, ओला, औरत, उठना, उतावला।

(५१) वर्णों के आदि में ⁄ और ⁄ इ, ई, ए, ऐ की सूचिका होती हैं। जैसे इमली, इन्तरा, इमारत।

(५२) वर्णों के अन्त में "और" चिन्ह आ के सूचक होते हैं। इन्हीं को यदि मोटा कर दिया जाय तो ये आँ या आंए के सूचक होते हैं। जैसे सुविधा, सुविधाएं।

(५३) वर्णों के अन्त में "और" उ, ऊ ओ औ, के सूचक होते हैं। चिन्हों का मोड़ वर्णों के मोड़ के अनुसार होता है। इन चिन्हों को मोटा करके लिखने से ये उओं इत्यादि, यानी उनके बहुवचन के सूचक शब्दों के सूचक होते हैं। जैसे चाकू, चाकुओं।

(५४) वर्णों के अन्त में ⁄ और ⁄ के चिन्ह इ, ई, ए, ऐ के सूचक होते हैं। इन्हीं को मोटा कर देने से ये इयों इत्यादि बहुवचनों के सूचक हो जाते हैं। जैसे फजीती, फजीतियों, दहरी, दहरियों।

एकावनवां अभ्यास।

(१) मुझे अपना अनुभव यह है कि जब तक एक लिपि-विस्तार-परिषद् की पत्रिका निकलती थी, मैं उसे बराबर

नोट—हर एक स्वर के लिये दो दो चिन्ह बतलाये गये हैं। लेखक अपने सुभीते के अनुसार इनका प्रयोग करें।

पढ़ा करता था, और नागरी अक्षरों में छपे हुये बंगला, मराठी, गुजराती लेख भी प्रायः सब . . था। हां तेलगू, तामिल लेख तो नहीं समझ पड़ते उसमें भी कहीं २ पुराने संस्कृत शब्द पहचान पड़ जाते उर्दू का तो कहना ही क्या है।

(२) पश्चिम और पूर्व के देश, यूरप, अमेरिका, जापानादि में, इण्डिया शब्द प्रसिद्ध है, जो हिन्द . . अधिक पास पड़ता है। और जैसे पंजाब प्रान्त का . . और उसकी बोली पंजाबी, बंगाल की बंगाली, . . गुजराती, फ़ारस की फ़ारसी बनारस की बनारसी, . . की शीराज़ी, रूम की रूमी, मिस्र की मिस्री, . . फ्रान्स की फरासीसी या फिरंगी, इसी चाल से हिन्द . . रहनेवाला हिन्दी चाहे वह किसी धर्म का मानने वाला और किसी अवान्त जाति का हो और उसकी बोली . सामान्यतः हिन्दी ही, चाहे उसका विशेष भेद बंगला, . . गुजराती, पंजाबी, सिन्धी आदि कुछ भी हो।

(३) क्लेश तो यह है कि जैसे एक रोग के कारण . रोग उत्पन्न होते हैं वैसे ही इस देश के शील . . स्वाधीनता और धन की हानि हो गई और निर्धनता काई भी यथमाद पनपते नहीं और शील भी . . होने नहीं पाता। पर अब लोग जाग रहे हैं और दिन परार्थबुद्धि, राष्ट्र बुद्धि, कुछ न कुछ बढ़ती जाती है . स्वार्थ और लोभ के भाव कम हो रहे हैं। इससे आशा है कि खोया हुआ शील लौटेगा और उसके साथ . और . . कल्याणकारी गुण वापस आवेंगे।

(५) एक लड़के को गुरू जी ने सूत्र पढ़ाया। अब वह पढ़कर बाहर निकला और रास्ते में घूमता २ एक अंधी गली में घुसने लगा तो एक आदमी ने उस से कहा, "कहां जा रहे हो?" यह सुनते ही वह लड़का बोला "मैं जा रहा हूं, तुम जा रहे हो, वह जा रहा है, मैं जा रहा था, तुम जा रहे थे, वह जा रहा था, मैं जाता रहूंगा, तुम जाते रहोगे, वह जाता रहेगा" यहसुन वह आदमी बड़ा चकित हुआ और पूछा, "भाई! यह क्या बकते हो।" बस लड़के ने फिर रटंत शुरूकी "मैं बकता हूं तुम बकते हो, वह बकता है, मैं बकता था, तुम बकते थे, वह बकता था, मैं बकूंगा, तुम बकोगे, वह बकेगा। यह रटना सुन बहुत लोग इकट्ठे होगये। लड़कों ने रास्ता चलना मुशकिल करदिया। एक लड़का बोल उठा "अब तो यह टट्टू चलने लगा।" लड़के ने अपनी पुनरावृत्ति आरम्भ की "मैं चलने लगा, तुम चलने लगे, वह चलने लगा, मैं चलने लगा था, तुम चलने लगे थे, वह चलने लगा था, मैं चलने लगूंगा, तुम चलने लगे, वह चलने लगेगा।" ज्यों ही यह रटन्त खतम होने को आई कि दूसरे लड़के ने कहा "इसने तो सब कह डाला" लड़केने फौरन जवाब दिया "मैंने कह डाला, तुमने कह डाला, उसने कह डाला, मैं कह डालता हूं, तुम कह डालते हो, वह कह डालता है, मैं कह डालूंगा, तुम कह डालोगे, वह कह डालेगा।" यह तमाशा देख कर कुछ भद्र पुरुषों ने उसको इस आफत से बचाने का यत्न किया और लड़कों को चुप कराया और उस लड़के को गुरुजी के यहां पहुंचाने का प्रयत्न करने लगे। वह लड़का रास्ता चलने लगा—लड़के तो पीछे ही थे इस कारण वह

आगे रास्ता न देख सका और गिर पड़ा। सब लड़के करतल ध्वनी करके कहने लगे "गिर पड़ा" फिर जो था उस लड़के ने भी अपना पाठ आरम्भ किया "मैं गिर पड़ा, तुम गिर पड़े, वह गिर पड़ा; मैं गिर पड़ा था, तुम गिर पड़े थे, वह गिर पड़ा था; मैं गिर पड़ूंगा, तुम गिर पड़ोगे, वह गिर पड़ेगा।" भद्र पुरुषों ने उठाकर गुरुजी के यहां पहुंचाया और कहा कि गुरु जी! वाह रे आपकी संस्कृत, यह जो आपने इसको रट्टू तोता बना रखा है। गुरुजी ने लड़के से पूछा कि तुम कहां चलेगए और यह सब क्या कहने लगे, लड़के ने कहा मैं कहने लगा था, आप कहने लगे थे, वह कहने लगा था; मैं कहने लगा, आप कहने लगे वह कहने लगा, मैं कहने लगूंगा, तुम कहने लगोगे, वह कहने लगेगा।" गुरुजी हंसने लगे और कहने लगे कि अभी इसने नये रूप रटने आरम्भ किये हैं इसीलिये इसका यह हाल है। महाशयों से कहा कि यह पढ़ाई संस्कृत नहीं वरन् अंग्रेजी है। यह भाषा की पढ़ाई है जो अंग्रेज़ी वाले जन्म भर किया करते हैं। जब यह समाप्त होलेगी तब संस्कृत की पढ़ाई आरम्भ होगी जिसमें वेद और शास्त्र पढ़ाए जाएंगे।

उपसर्ग।

हिन्दी में बहुत से उपसर्ग केवल एक या दो व्यञ्जनों के होते हैं। इनमें से बहुतों को पूरा लिखना सुगम है, बाकी कुछ के लिये नीचे लिखे नियम ध्यान से पढ़ने चाहियें।

(६७) शब्दों के पहले, व्यंजन के सिरे पर एक बिन्दु और (८) अलग लिखने से क्रम से उनके आगे * अ या प्र और [illegible]

* यहः "अ" का प्रति लिखा गया वहां पर कहीं इत्यादि [illegible]

[illegible] चाहिये।

प्र या प्रा लग जाता है। जैसे, प्राप्त, प्रादुरभाव, परिशीलन, प्रस्ताव, प्रभात।

(६८) शब्द के आदि में अलग 'प्रत का चिन्ह' (ᐟ) लगाने से शब्द के पहले, प्रत, प्रति, प्रत्य लग जाता है। जैसे प्रत्यक्ष, प्रताप, प्रतिरोध।

(६९) शब्दों के आदि में 'न' का चिन्ह लगा देने से निरा, निर, नी, आदि में लग जाता है जैसे निस दिन, निपक्ष जहां भ्रम की सम्भावना या असुविधा हो वहां इसको अलग भी लिख सकते हैं, जैसे, निरलोभ।

७० जो शब्द 'स' वृत्त से आरम्भ होते हैं उनके आगे एक छोटी सी रेखा बढ़ाने से उनमें अन, इन, अनु लग जाता है। जैसे, समझी, अनसमझी, अनुशीलन, इनसान।

७१ किसी शब्द के सिरे पर एक छोटी लकीर (\ या /) लगा देने से उनके आगे 'ब' लग जाता है। जैसे, बेअदब, बेगार, बेदार।

पचपनवां अभ्यास।

(१) प्रचार, प्रचुर, प्रचुरता, परतन्त्र, परतन्त्रता, परस्त्री, परम। (२) प्रण, प्राण, प्रकाश, प्रकाशित, प्रादुर्भाव, प्रारम्भ पराधीन, (३ पराक्रम, प्रायशः, पराकाष्ठा, परहित, पराङ, (४ मुख, प्राचीनता, प्रारम्भिक, प्राप्ति, प्रभुत्व, परमगति, प्राण। (५) प्रतिरोध, प्रतिकार, प्रतिहारी, प्रतिकृति, प्रत्युपकृति, प्रत्युपकार (६) प्रतिदिन, प्रतिक्षण, प्रतिजन, प्रतिघर, प्रत्याहार, प्रत्युत। (७) निरंकुश, निरंकुशता, निरञ्जन, निरगुण, निष्कण्टक। (८) निकट, निठुर, निरजन

निर्मल, निरपराध, निष्ठुर (९) निराकार, निराकरण, निराधार, निर्मोही, निर्धन (१०) निपट, निर्जीव, निन्दक, निन्दा, निन्द्य, निर्वाह (११) निश्चित, निशिदिन, निषाद, निष्कामता, निष्फल (१२) निरादर, निर्धारित, निस्सार, निस्तारक, निस्तार (१३) अंशुमाली, अंशुजाल, अंशांश, अंशित, अंशतः (१४) अनुकूल, अनुभव, अनुपम, अनुचित इन्तिज़ाम (१५) अनदेख, अनदेखा, अन्तरात्मा, अन्तःकरण (१६) बेकार, बेक़दरी, बेकारी, बेगारी, बेमानी, (१७) बेनज़ीर, बेमिसाल, बेमन, बेफ़िक्री, बेमज़ा (१८) बेलौस, बेतरह, बेईमान, बेइज़्ज़त, बेइरादा।

(१९) प्राचीन काल में प्रत्येक व्यक्ति के प्रतिदिन की परिचर्या में प्रातःकाल उठकर अपने परिवार में प्रत्येक प्रतिष्ठित या अप्रतिष्ठित अपने से बड़े के प्रति प्रेम तथा प्रतिष्ठा से प्रणाम करना था।

(२०) इस निर्जन वन में उस निर्मल नीर वाले नाले के निकट एक निर्धन, निराधार पर निरंकुश, निश्छल और निष्कपट निष्कामेश्वर बैठा निराकार, निर्लेप, निर्विकार, जगदाधार परमात्मा से अपने निस्तार के लिए निरन्तर प्रार्थना कर रहा है।

(२१) बेकार मनुष्य बेकाम बैठा हुआ बेसिरपैर और बेफ़ायदे की बातें बेधड़क किया करता है, उसकी बेअकली के कारण सब उसकी बेतरह बेकदरी और बेइज़्ज़ती करते हैं।

प्रत्यय।

संयुक्त शब्द दो प्रकार के होते हैं। (१) एक तो वे हैं जो संधि तथा समास के कारण बनते हैं जैसे पुरुषोत्तम,

विद्यालय इत्यादि। लिखने में यदि इस प्रकार साथ ही मिल लिये जाँय और आकार भद्दा न होवे अच्छा है नहीं तो उन्हें तोड़कर पास २ लिखना जैसे पुरुषो-त्तम, विद्या-लय, इत्यादि।

(२) दूसरे प्रकार के वे शब्द हैं जो प्रत्यय लगने से बने हैं। उनमें अधिक उपयोगी प्रत्ययों के लिए चिन्ह उदाहरण दिये गये हैं। इनको बड़े ध्यान से पढ़ना तथा संकेतरण में देखकर कई बार लिखकर याद कर लेना चाहिये।

(७२) कृदंत शब्दों में, 'व' और 'ह' की रेखाएं 'नेवाला' और 'नेहारा,' और संज्ञा वाचक शब्दों में 'वाला' और 'हार' की सूचक होती हैं। जैसे, जाने मिठाईवाला, बांटनेहारा, काटनेहारा, लकड़िहारा।

(७३) शब्दों के अन्त में *ııı* लगाने से उनमें त्र, और त्रता, त्रेता त्रवना लग जाते हैं। जैसे चित्र, मित्रता पत्र, और स्वतंत्र।

(७४) इसी चिन्ह की पिछली टांग ज़रा खींच देने से त्रित्रता, त्रित्र त्रित्रता लग जाते हैं। जैसे, चरित्र, पवित्र।

(७५) दूसरे प्रत्ययों के चिन्ह उदाहरण सहित नीचे लिखे हैं। (रेखाक्षर संकेतरण में इन्हें मिलाते चलना चाहिये)

(१) 'द' दार या दारी के लिये। जैसे ईमानदार

(२) 'O' मान, वान या मानी के लिये, जैसे, विद्वान, बुद्धिमान, श्रीमान्।

(३) 'ग' 'गृह' या 'गार' के वास्ते जैसे ग्रन्थागार मददगार।

(४) 'आल' 'आलय' या 'आलु' के लिये, जैसे भोजनालय दयालु, धर्मालय।

(५) 'खाना' खाना,-के लिये, जैसे कारखाना, जेलखाने,

(६) कार कार, कारी, कारा के लिये, जैसे, दस्तकार हलकारा, अहलकार।

(७) 'स्थान' स्थान के लिये। जैसे, राजस्थान, मरुस्थान, जन्मस्थान।

(८) 'स्थ' अवस्था के लिये। जैसे, हीनावस्था, दीनावस्था, बाल्यावस्था।

छप्पनवां अभ्यास।

(१) अगले समय में समाज में विद्वान मनुष्य धनवाले से अधिक श्रेष्ठ समझा जाता था। बड़े २ श्रीमान् स्वतंत्र विचारनेवाले, पवित्र, दयालु, गुणवन्त, मोक्ष के देनेहारे, सच्चरित्र महात्माओं की तावेदारी करना अपनी भाग्यवानी समझते थे।

(२) अब पवित्र, ईमानदार, बुद्धिमान लोग बंदीगृह में जाने को स्वतंत्रता देनेवाला मान लेते हैं तो उनके वचन को माननेवाले, उन सच्चे श्रीमानों की आज्ञा माननेहारे भयंकर कारागार को देवालय मानकर उसमें जाने का प्रबन्ध करते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि दुनियादारी का सुख दुःख केवल मन का उद्गार है नहीं तो अपमान का घर जेलखाना कैसे स्वीकार होता।

(३) किसी दयालु, दयानतदार, दिलदार, मददगार, मित्र की मित्रता की भांति उस दयावन्त [illegible]
की अनुग्रह है।

पांच सौ पउंड।

'रु॰ " " " रुपये " " पांच सौ रुपये

१० लाख रुपया

अ॰ प॰ आना पाई के लिये ५ अ ६ प या ५।—६—५

वक्ताओं के लिखने और उनको ठीक ठीक हिन्दी में नक़ल करने में निम्नलिखित चिन्हों से बहुत सहायता मिलती है।

(१) यदि कोई शब्द ठीक सुना न गया हो या लेखक को यह शक हो कि उसने कदाचित् भूल लिख दिया है तो उस शब्द के नीचे एक × ऐसा चिन्ह बना देना चाहिये। यदि कुछ शब्द छूट गये हों तो {...∧...} ऐसा चिन्ह बनाकर उतनी जगह छोड़ देनी चाहिये जितने शब्द छूट गये हों।

(२) यदि लेखक समझता है कि उसने वाक्य लिखने में ग़लती की है तो 0 ऐसा निशान, और यदि वह समझाते हैं कि बोलने वाले ने ग़लती की है तो × ऐसा निशान पन्ने के हाशिये पर कर देना चाहिये।

(३) जब वाक्य ख़तम हो तो एक बड़ी तिर्छी लकीर और व्याख्यान बन्द होने या लेखक के लिखना बन्द कर देने पर दो बड़ी तिर्छी लकीर बनाना चाहिये।

(४) विख्यात श्लोक कहावत इत्यादि को पूरा लिखने की आवश्यकता नहीं है। उनके आदि और अन्त के कुछ शब्द लिखकर बीच में एक लम्बी लकीर दे देनी चाहिये।

(५=) श्रोताओं के प्रसन्नता अथवा विरोध सूचक आवाज़ों के लिये निम्नलिखित चिन्ह दिये जाते हैं। इनको छोटे बड़े कोष्टों में बन्द करना चाहिये। इनके बिना भ्रम में ... है

अनुसार रेखाक्षर संकरण में देखो, जैसे "खुशी के मारे" के लिये ७८ के (५) नम्बर में चिन्ह मिलेगा।

(१) सुनो सुनो (२) हीर हीर (३) नहीं नहीं (४) नो नो (५) खुशी के मारे (६) चीयर्स (७) कहकहा (८) रोकी हुई हंसी (९) शोर (१०) वाह वाह (११) मखौल (१२) लगातार करतलध्वनि इत्यादि (१३) वन्दे मातरम् (१४) गांधीजी की जै (१५) हिन्दू मुसलमान की जै (१६) पञ्चम जार्ज की जै।

शब्दों के स्थान।

(७९) रेखाक्षरों के लिखने के तीन स्थान होते हैं पहला स्थान लकीर के ऊपर, दूसरा लकीर पर और तीसरा लकीर को काटता हुआ जैसे ...... 'नाक' पहले स्थान पर है, 'तक' दूसरे स्थान पर लिखा गया है और 'तुक' ...... तीसरे स्थान पर लिखा गया है।

यह पहले भी कहा जा चुका है कि ज्यों ज्यों लेखक उन्नति करता जाए उसको चाहिये कि स्वर लगाये बगैर लिखने और पढ़ने का अभ्यास करे। आदि अन्त में लगाने के स्वर चिन्ह पहले लिखे जा चुके हैं। बीच में आने वाले स्वरों के लिये शब्दों को आवाज़ के अनुसार उचित स्थान पर लिखने से उनमें स्वर विदित हो सकते हैं।

(i) पहले स्थान पर लिखा हुआ रेखाक्षर यह सूचित करता है कि इस शब्द के बीच में 'आ' होना चाहिये। जैसे काम, जामा, प्रमाद।

(ग) इसी तरह जब शब्दों के बीच में अ, इ, ई या, ए होते हैं तब उनका स्थान दूसरा होता है। जैसे, लकीर, पर तला, सेठ।

(३) जब शब्दों के बीच में उ, ऊ, ओ, औ होते हैं तब वे तीसरे स्थान में लिखे जाते हैं जैसे कुदरत, कुश्ती, गोश्त, मुल्क, दोस्त।

आवश्यक सूचना।

जिन शब्दों के बीच में दो या दो से ज़्यादह स्वर हों तो उनके स्थान का सूचक वही स्वर होगा जिसकी आवाज़ सब में मुख्य सुनाई पड़ती हो या जिस स्वर के मालूम होने से दूसरा स्वर स्वयं मालूम हो जाय। जैसे 'प्रतिपालक' इसका पहला स्थान है, क्योंकि "ति" के 'इ' की आवाज़ ऐसी बल वाली नहीं है जैसी 'पा' में 'आ' की। 'ज़िमींदार' यह दूसरे स्थान पर लिखा जायगा क्योंकि 'इ' की बोली मुख्य है, विरोध यहां 'दा' का 'आ' 'नि' के 'इ' से बलवान् है इस लिये इसका तीसरा स्थान होगा।

इस पर भी कहीं कहीं यह निश्चय करना कठिन होजायगा कि दो या तीन स्वरों में कौन सा लिखा जावे। यहां लेखक को वह स्थान चुन लेना चाहिये जिसकी सहायता से वह शब्द को सुगमता से पढ़ ले।

शब्दों के संक्षिप्त रूप।

८० शीघ्र-लिपि-प्रणाली में बड़े शब्दों को संक्षिप्त रूप में लिखना अति आवश्यक है। ऐसे रूपों में बहुधा आधे शब्द या शब्दों का पहला और अन्त का अक्षर लिखा जाता है, शब्दों के इस तरह लिखने की प्रणाली अंगरेज़ी भाषा में

अधिक प्रचलित है। हिन्दी शीघ्र-लिपि-प्रणाली में शब्दों के संक्षिप्त करने के विषय में निश्चित नियम बनाने कठिन हैं। ऐसा करना व्यक्ति विशेष के शब्दों के परिचय तथा लिखित विषय के ज्ञान पर अधिक निर्भर है। प्रत्येक मनुष्य अपने सुभीते और लिखित विषय के पढ़ने की शक्ति के अनुसार शब्दों को संक्षिप्त रूप में लिख सकता है। ऐसा करने से उसको सैकड़ों चिन्हों को, जिनमें बहुत से उसके निज के कार्य्य क्षेत्र में व्यवहृत नहीं होते, रटना नहीं पड़ता। शब्दों का संक्षिप्त रूप बनाते समय दो बातों का ध्यान अवश्य रखना चाहिये। (अ) 'संक्षिप्त चिन्ह' ऐसा न हो जिससे किसी दूसरे शब्द का बोध हो या उसके रूप में कोई अर्थ लग सकता हो। (ब) वह ऐसा न हो जिसमें अपने लिखे को पढ़ने में असुविधा हो।

कुछ मुख्य शब्दों के लिये कुछ संक्षिप्त चिन्ह नीचे दिए गये हैं। इनसे पाठकों को ज्ञात हो जायगा कि शब्दों के संक्षिप्त चिन्ह साधारणतया कैसे बनते हैं और बहुत से बने बनाये चिन्ह भी मिल जायेंगे, जिन के याद कर लेने से लिखने की गति में बहुत वृद्धि होने की सम्भावना है:—

(क) रेखाक्षर में लिखते समय अक्सर बीच का अनुस्वार या 'म' गिरा दिया जाता है। जैसे, १. सन्तुष्ट, २. कानफ्रेंस, ३. आरम्भ, ४. मन्तव्य।

(ख) अंगरेज़ी के शब्द जो हिन्दी में अधिक प्रयोग किये जाते हैं:—

(१) मनेजमेंट, (२) प्लेटफ़ार्म, (३) पबलिक (४ प्रेज़िडेन्ट।

(७) स्वयम्सेवक (८) षड्यंत्र (९) राजविसव (१०) घार पत्र (११) साधारण सभा (१२) धर्म्म प्रचार (१३) रमक (१४) अहिंसात्मक (१५) प्रणाली (१६) (१७) सहयोगी (१८) असहयोगी (१९) (२०) हपाकांक्षी (२१) निहायत (२२) कर्मचारी।

काटते हुए व्यन्जन।

८१. नीचे लिखे व्यञ्जन शब्द चिन्ह जिन व्यञ्जनों को ... हैं उनके पीछे ये शब्द लग जाते हैं जिनके ये चिन्ह सूचक होते हैं।

(१) 'स '* सभा के लिये। जैसे राजसभा, सभा, नागरीप्रचारिणी सभा।

(२) 'म ' मण्डल के लिये। जैसे सञ्चालक मण्डल, ज्ञानमण्डल, संन्यासी मण्डल, भारतधर्म महामण्डल।

(३) 'त', 'तरह' और 'तस,' 'तरह से' के लिये। जैसे अच्छी तरह, ख़ास तरह से, इस तरह से, किस तरह से, इस तरह से, सब तरह से।

(४) 'तर', 'तौर पर' के लिये और 'तरस', 'तौर से' के लिये। जैसे साफ़ तौर पर, ठीक तौर से।

(५) ' ग ' यानि '—' गवर्नमेण्ट के लिये।

जैसे, न्यायी गवर्नमेण्ट, पैशाचिक गवर्नमेण्ट, ब्यूरोक्रैटिक गवर्नमेण्ट।

---

* जो व्यञ्जन या शब्द यहां लिखे गये हैं वे अपने स्थान पर किन्हें सूचक होते हैं, यानी सभा के लिये ' स ' नहीं काटना पड़ता (' स ' ऐसा चिन्ह ') ' काटता है।

चाहते हैं (७) ईश्वर की प्रार्थना (८) ईश्वर प्रार्थना (९, ईश्वर से प्रार्थना (१०) हमारा यह प्रयोजन है – था (१०) यह ही नहीं,-है (११) आप यह तो हैं-थे (१२) हमलोगों को चाहिये कि (१३) सुबह से तक (१४) बहुत अच्छा (१५) पहले कहा जा चुका है। (१६) मैं आपके सामने खड़ा हुआ हूं। (१७) मुझको कहना है (१८) जैसा पहले कहा जा चुका था (१९) जैसा पहले कहा गया था (२०) जैसा अभी कहा गया था (२१) मैं तो पहले ही कहता था।

शब्दाक्षरों की सूची।

अ—(१) अप (२) अक्ल अक्लमन्द (३) असर (४) अगर (५) अच्छा—च्छी,च्छे (६) अत्यन्त (७) अत्याचार (८) अतएव (९) अतः (१०) अति (११) अथ, अथवा (१२) अनुसार (१३) अपना नी-ने (१४) अफसोस (१५) अब (१६) अभिप्राय, अभी (१७) अर्थ (१८) अर्थात् (१९) अवश्य (२०) अवस्था (२१) असंभव (२२) असिसटेंट (२३) अतिरिक्त।

आ—(१) आ (२) आइए (३) आई, आए—आया (४) आऊं आओ, (५) आच्छादित (६) आदि (७) आप (८) आर्थिक (९) आवश्यकता।

ई—(१) इतना (२) इत्यादि (३) इधर (४) इन—इन्हें (५) इन्होंने (६) इस, इसे (७) ईश्वर।

उ—(१) उठ-उठा-उठो-उठाये (२) उठो-उठ उठे-उठाओ (३) उतना (४) उद्धार—उदाहरण (५) उधर (६) उन उन्हें (७) उन्होंने (८) ऊपर—उपरान्त (९) उस, उसे।

(७) तैने, तूने (८) तो (९) तक (१०) तजवीज़ (११) तजरवा (१२) तथा (१३) तभी (१४) तरह-तैय्यार।

थ—(१) था-थी (२) थे (३) थोड़ा।

द—(१) दे-दी-दिया-दिये (२) देखा-का-खी-खे (३) देखूं दुःख (४) दुनिया-दोनों (५) दाता-दिया (६) ता-ते (७) दूत।

ध—(१) धीरज-धैर्य (२) धर्म।

न—(१) ने (२) न तो-नहीं तो (३) नहीं (४) न

प—(१) पा-पै-या-ई-पाटक (२) पारलियामेन्ट-परमात्मा प्रायः (३) पालिसी-पालिटिक्स (४) पीछे-पूछा-छी-छेव (५) पुलिस-पोलिटिकल (६) पढ़ा-ढ़ी-पढ़ पढ़ाये (७) पढ़ो-ढूं-पढ़ाओ-पढ़े (८) प्रात:काल (९) प्रतिकूल (१०) प्यारा-प्यारी (११) प्यारे-प्यारो (१२) पर (१३) प्रत्येक पृथ्वी (१४) प्रिय-प्रेम (१५) पहले, पहलो, अपील (१६) पहुँचाते-ती-ता, पंडित (१७) पहुच-चा-चीं-चावे (१८) पहुचो-चे-चाओ।

फ—(१) फ़ायदा (२) फिर (३) फिसाद (४) फ़क़त।

ब—(१) बगैर (२) बड़ा-ड़े-ड़ी (३) बनता ते-ती (४) बन्द-न्दी, बन्दोबस्त (५) बलिक, (६) बालशेविक (७) बह, हां (८) बहन-ने (९) वहाँ (१०) बहादुर (११) वही,-हीं (१२) बहुत, बुद्धि (१३) बात, बाद (१४) बाबू, बाप (१५) बार (१६) वास्तव-विक (१७) बाहर (१८) विचार, वे (१९) बिना (२०) विद्या, विदित (२१) बिल्कुल (२२) विषय, क (२३) विश्वास (२४) विश्वनाथ (२५) वैसा-सी-से (२६) बोला-ली-ले।

ह—[१] हम,-मैं, ही [२] हमारा-री [३] हमारे [४] हमेशा [५] हाकिम [६] हिफ़ाज़त [७] [illegible] [=] हिन्दू [८] हिन्दुस्तान [१०] हीन [११] [illegible] [१२] हूं-हो-है [१३] हुए [१४] हुक्म [१५] होताथे, [१६] होना,-ने, है।

अठावनवां अभ्यास।

मेरे प्यारे भाई पं० विश्वनाथ साहिब,

आपने जो मेरे लिये तजवीज़ की उसे ज्योंही पढ़ा अफ़सोस सा अवश्य हुआ परन्तु थोड़े समय में फिर [illegible] ही हो गया। सम्पादन का कार्य तो वास्तव में [illegible] है। फ़क़त साहित्य का हो नहीं, साहित्य और [illegible] दोनों वल्कि यों कहना मुनासिब होगा कि साहित्य, सोसा, इटी तथा राज्य तीनों का फायदा होता है। किन्तु स्वाभाविकतः कुछ मनुष्य स्वतः कई कार्य सुन्दरता से कर सकते हैं और कई पढ़ाने पर और तजुर्बा होने पर भी बिलकुल ठीक तरह से नहीं कर सकते। इस कारण से सम्पादक होना या कहीं पुलिस का असिस्टेंट सुपरिंटेंडेंट होना मेरे स्वभाव के अनुसार बिलकुल ठीक नहीं है। अतः आप अगर इस बात में मुझे अभी स्वराज्य दे दें तो विश्वास रहे कि मैं स्वयम स्वतंत्रता से सिर्फ यह विषय चुन लूंगा जो मेरे लिये ठीक होगा। अपनी तारीफ़ तो नहीं करता, मगर जहांतक मुझे विश्वास है किसी रीति से मर्यादा के बाहर कोई कार्य भी न करूंगा। उदार महाशय या शायद मिस्टर ने उदाहरण के साथ कहा कि किसी राज्य के बन्दोबस्त के लिये अब पार्लियामेंट का होना अत्यन्त आवश्यक है। यह बिलकुल सत्य होता यदि इन सारा

में सिवाए भारतवर्ष के ज्यादा कर दिया गया होता। आप पूछेंगे, "अब तुमने एकाएक ऐसा क्यों कहा? कभी तारीख पढ़ी है।" मैं केवल हां ही न करूंगा बल्कि सबब भी दिखाऊंगा। जनाब पृथ्वी में जिधर चाहिये देखिये केवल हिन्दू ही तक ऐसे लोग पाइयेगा जो जिस हालत में पहले थे प्रायः वैसेही अब भी दिखाई देते हैं। अतएव जैसा राज्य का बंदोबस्त तब सम्भव था अब भी है। किसी समय बड़े से बड़े कितने स्वतंत्र राज्य इसी हिन्दुस्तान में बग़ैर पार्लियामेंट के थे। उनमें सत्य और संयम का राज्य था, स्वार्थ और अत्याचार का सर्वदा अभाव रहता था। सुधारकों को सुधार की आवश्यक्ता ही नहीं जान पड़ती थी।

राज्य में प्रति मनुष्य अति स्वस्थ, शिष्ट और पक्षी तक का प्रेमी था। सब लोग सबकी सहायता के लिये सदा तय्यार रहते थे। शासन की यह व्यवस्था थी कि मुश्किल से ही कोई अपील करता हो। इसका सबब यह था कि बड़े बड़े शासन कर्ता, जैसे इस समय के हमारे कलक्टर इत्यादि हैं, उन्हें संयम, विद्या आदि में बड़ा समझ उन मान्यवरों की तरफ इतना विश्वास था कि कुछ अन्याय या ज़िद का क्या मतलब, सिवाए हां के कभी नहीं तो कहते ही न थे बात रद करना कैसा! जहां सत्य का राज्य हो वहां शासिमों मे क्या दिल पालिटिक्स कहां? हर एक शासक अपने शासन के अभिप्राय का सारांश लोगों को खूब साफ़ साफ़ समझाना अपना कर्तव्य समझता था। इन्हें धर्म इतना प्यारा था कि प्रत्येक मनुष्य उसकी हिफाज़त करने में अपनी ज़िन्दगी की ज़िम्मी नहीं समझता था। कहांतक कहें, यही एक बात है

जिसमें वे किसी समय जल्दी ही कर जाते थे। जिन प्रथाओं में क्या पढ़ा जाए और कितना पढ़ा जाए यह सब उन्होंने ठीक ठीक समझा हुआ था। ज्योंही अक्षर की पकड़ आ जाती धर्म पढ़ाया जाने लगता जिसमें बड़े होने उपरान्त धीरज और धर्म को सदा अपने साथ रखें, इन्हें धर्म के प्रतिकूल चलना सम्भावना की पहुंच के बाहर अर्थात् असम्भव हो जाए। ईश्वर, शिव या परमात्मा (चाहे जो कहो) का प्रेम इतना उठ जाए कि दुनिया के किसी फ़साद या दुःख को न तो कुछ चीज़ समझें और न इधर उधर के दुःखों को देख उतना दुःखी ही हों।

उदाहरण के लिए आइये, उस तारीख़ की तारीख़ को देखें जो बाहर से आए हुए दूतों ने लिखी है कि उस समय के भारतवासी बड़े बहादुर और अत्यंत संयमी थे। सबके घर प्रातःकाल से शाम तक ज्यों के त्यों पड़े रहते लेकिन चोरी न होती, भारत की बहनें अक़लमन्द और धर्मवाली होती थीं। उन्होंने भारत को ऐसा हीन नहीं पाया जैसा हम अब पाते हैं। इस बार के लिए बहुत हुआ, सो भी हिन्दी में। पढ़ने में आपको दुःख होगा। इधर कब आऊंगा सो नहीं कह सकता। लेकिन जब वहां पहुंचूंगा, आपके यहां अवश्य आऊंगा, और उस-को नहीं गया तो नहीं।

भवदीय—
शाहेब मुहम्मद।

आवश्यक सूचना—इस पत्र के अभ्यास में प्राय सब अक्षर आ जाते हैं। छात्रों को चाहिये कि इस अभ्यास को कई बार लिखकर कापियों का पेज लें, और फिर उनमें आवश्यक लिख बताकर व्यायाम करें।

॥ ॐ ॥

ॐ त्वंहिनः पिता वसो त्वं माता शतक्रतो बभूविथ । अधाते सुम्नमीमहे ।

हिन्दी शार्टहैण्ड

अर्थात्

हिन्दी की संक्षेप लेख-प्रणाली ।

रेखाक्षर संस्करण ।

लेखक और प्रकाशक---

निष्कामेश्वर मिश्र बी० ए० एल्० टी०,

बनारस ।

दुर्गाप्रसाद शर्मा द्वारा—

आदर्श प्रेस, सप्तसागर, बनारस सिटी में छपा—४१६ ।

१९२१ ई० ।

पहला अभ्यास
दूसरा अभ्यास

तीसरा अभ्यास
६. जैसे
पाँचवा अभ्यास
(१)
(२)
(३)
(४)
(५)
(६)
सातवाँ अभ्यास
(१)
(२)
(३)
(४)

(३)
(४)
(५) यथा,
अठारहवाँ अभ्यास
(१)
(२)
(३)
(४)
(५)
(६)
(७)
(८)
(९)
(१०)

चौबीसवाँ अभ्यास

(६)

(५)

(६)

(७)

७.

३८.

उनतालीसवां अभ्यास

शब्दाक्षर—— राजा, राज्य रहा, रहे, रहो

अनुसार लफ़्ज किन्तु

(१)

(२)

(३)

(४)

(५)

(६)

(३८)

(४०) (४१)

इकतालीसवां अभ्यास।

शब्दाक्षर- हुआ,हुई कोई वही,यही जहां
गया,गो,गे अवस्था कह,कहा-कही मथी
को-हूं-है अभि,अभिप्राय कठिन-के
भाई,भाइयो॥

(१)

(२)

(३)

(४)

(५)

(६)

(७)

तैंतालीसवाँ अभ्यास ।

वाक्यचिन्ह— यहभी वहांभी तुमभी
मैंभी, मेंभी इसकारण इसकारणसे
क्याकारणहै (कि) क्याकारणहुआ (कि)
होजानाहूं होताहै-हूं होतेहैं-हो
अबक्याकरें-करूं तुमतो तुमसे
मैंजाताहूं क्याकरताहै-तेहो-तेहैं जबसे
जिससे जिनसे कहांसे किनसे
जहांसे तेरेलिये सबकेलिये लोगोंकेलिये
सबतरफ सबतरह मैंभीनहींहूं
मैंभीहूं भीनहींहै भीनहींथा

(१)

(२)

(३)

होना-ती-ते   साहित्य   वस्तु-तः

रहना-ते-तीं   मन, मत   रोना,

प्रति   चाहना-ती-ते

सेतालीसवां अभ्यास।

शब्दाक्षर— दिया, दाता दूत
देता-ती-ते असिस्टेण्ट सोसाइटी
नतो, नहींतो अनुभव-वी श्रीयुत
अतिरिक्त था-थी थे, तभी
इत्यादि अत्यन्त किया हुए
क्या सप्रेम

४४.

४५. ४६.

अड़तालीसवां अभ्यास।

शब्दाक्षर— उठ-ठा-ठी-ठाये ठीक, ठिक
उठो-ठे-ठूं-ठावी थोड़ा-ड़ी प्यारा-री
प्यारे-रो मुलाकात, मुलायम मुलज़िम
मुसलमान, मालूम चाहा-ही-हे चीज़
चाहिये चुनाव साया-यी-ये-इये

लगा-गे-गी, लम्बा ला, ले, ली कर-ता-री

करो-रूं-राते-रे करना-ने-नी

(१)

(२)

(३)

(४)

(५)

(६)

(७)

४८.

पचासवां अभ्यास।

(१) — १४ — (२) (३) (४) (५)

जैसे-

जैसे-

जैसे-

जैसे-

यावनवांऽभ्यास।

६. (१) × (२) × (३) ×

सत्तावनवाँ अभ्यास।

शब्दाक्षरों की सूची

१८. २२. ३२. ३६. ५. १२.
१९. २६. ३३. ४०. ६.
२० २७. ३४. है ७.
२१ २८. ३५ १. ८.
२२. २९. ३६. २. ६.
२३. ३०. ३७. ३ १०.
२४. ३१. ३८. ४ ११.